Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

(व्याख्या : गद्य खण्ड)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: CSHL11

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

(व्याख्या : गद्य खण्ड)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. गोदान (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 5–15

2. दिव्या (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 16–39

3. मैला आँचल (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 40–46

4 महाभोज (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 47–56

5. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 57–58

6. एक दुनिया समानांतर (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 59–86

7. भारत-दुर्दशा (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 87–91

8. स्कंदगुप्त (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 92–103

9. आषाढ़ का एक दिन (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 104–107

10. चिंतामणि (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 108–113

11. निबंध-निलय (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या) 114–116

अध्याय
1

गोदान (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानो झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है? ***(परिच्छेद-1)***

संदर्भ व प्रसंग: *प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत ये पंक्तियाँ उपन्यास में लेखकीय वक्तव्य के रूप में आई हैं। चालीस वर्ष से भी कम आयु के होरी द्वारा 'साठे पर पाठा' होने की उक्ति का सहारा लेकर अपनी मर्दानगी सिद्ध करने के प्रयास को धनिया अभाव का उल्लेख कर खारिज करती है। इस कटु सत्य के प्रहार से विचलित होकर होरी साठ के पहले ही अपने मरने की भविष्यवाणी का सहारा लेता है जो कहीं-न-कहीं अपने भीतर यथार्थ को भी समाहित किए हुए होता है। यह धनिया को भीतर तक बेध डालता है। प्रेमचंद ने यहाँ धनिया के मानस में प्रवेश करते हुए उपर्युक्त पंक्तियाँ लिखी हैं जो प्रेमचंद की संवेदना और कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।*

व्याख्या: किसानी समाज में वैधव्य सिर्फ पति की मृत्यु नहीं होता बल्कि एक ऐसी त्रासदी होता है जिसमें नारी का समूचा भविष्य संकटों से विद्ध जाता है। अभाव और गरीबी में भी वह इस संबल के सहारे स्वयं को अर्थवान महसूस करती है। प्रेमचंद ने सुहाग को तिनका बताकर अभाव और गरीबी की अंतहीन भयावहता को मूर्तता प्रदान की है लेकिन साथ ही उन्होंने किसानी-जीवन में सुहाग के महत्त्व को भी धूमिल नहीं होने दिया है।

विशेष:

1. प्रेमचंद ने इन पंक्तियों में मनोविज्ञान का सहारा लिया है।
2. गोदान में धनिया का व्यक्तित्त्व निर्भीक, प्रखर, जुझारू और स्पष्टवादी है। ये पंक्तियाँ उसके चरित्र में निहित गहन संवेदनशीलता को उजागर करती हैं।
3. ये पंक्तियाँ यह दर्शाती हैं कि प्रेमचंद स्थितियों की सूचना देने वाले कथाकार नहीं हैं बल्कि उनके यहाँ परिस्थितियों में लिपटी हुई वास्तविकता कलात्मक रूप में आती है।
4. ये पंक्तियाँ तत्सम एवं तद्भव शब्दावली के रचनात्मक मेल का भी उत्तम निदर्शन हैं।

2

लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, जब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। ***(परिच्छेद-2)***

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी उपन्यास की दशा-दिशा परिवर्तित करने वाले मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित गोदान से उद्धृत है।

प्रसंग: *रायसाहब, होरी को आने वाले समय में होने वाले परिवर्तनों की संभावनाओं से अवगत करा रहे हैं।*

व्याख्या: रायसाहब होरी को संभावना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि वह दिन दूर नहीं जब जमींदार वर्ग का नामोनिशान मिट जाएगा, स्वयं को इस परिवर्तन हेतु उत्सुक प्रदर्शित करते हुए वे कहते हैं कि वह स्वयं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनकी नजरों में यह सबके उद्धार का दिन होगा। जब तक जमींदार वर्ग अपनी संपत्ति के मोह से दूर नहीं होता, तब तक यह संपत्ति उसे बंधन में बांधे रखेगी, तब तक मानवता से हमारी (संपन्न वर्ग) दूरी बनी रहेगी, वस्तुत: इस दिन को प्राप्त करना हमारा सर्वोच्च लक्ष्य भी है।

अध्याय
2

दिव्या (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

मधुपर्व

1

जन्म का अपराध? यदि वह अपराध है तो उसका मार्जन किस प्रकार सम्भव है? शस्त्र की शक्ति, धन की शक्ति, विद्या की शक्ति, कोई शक्ति जन्म को परिवर्तित नहीं कर सकती! कोई भी उपाय जन्म के अपराध का मार्जन नहीं कर सकता! जन्म के अन्याय का प्रतिकार क्या मनुष्य दैव से ले?... या उन लोगों से ले जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिये जन्म से असत्य अधिकार की व्यवस्था निर्धारित की है?...हीन कहे जाने वाले कुल में मेरा जन्म अपराध है अथवा यह द्विज कुल में जन्मे अपदार्थ लोगों का अहंकार मात्र है?

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी की प्रगतिवादी उपन्यास परंपरा के शिखर पुरुष 'यशपाल' द्वारा रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है। 1945 में रचित इस उपन्यास का केंद्रीय विषय नारी एवं वंचित वर्ग की समस्याओं का विश्लेषण है जो तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलन को सामाजिक स्वाधीनता की नई राह दिखलाता है।

प्रसंग: *जब पृथुसेन को दिव्या की शिविका निम्न कुल में उत्पन्न होने के कारण उठाने नहीं दिया जाता तो अपने को आहत महसूस करता हुआ वह ऐसा कहता है।*

व्याख्या: पृथुसेन कहता है कि यदि मेरा निम्न कुल में पैदा होना जन्म का अपराध है तो इसका परिमार्जन कैसे हो सकता है, कोई तो उपाय होगा, जो इस अपराध को परिमार्जित कर सके। लेकिन इस वर्णवादी समाज व्यवस्था में ऐसी कोई शक्ति यथा अस्त्र, शस्त्र या विद्या रूपी शक्ति नहीं है जो इस अपराध को कम कर सके।

तब वह सोचता है कि यदि ऐसी कोई शक्ति नहीं है तो फिर मनुष्य इस अपराध, अन्याय का बदला किस से ले–भाग्य से या समाज के उन लोगों से जिन्होंने यह अन्यायपूर्ण व्यवस्था निर्मित की है। क्या वाकई निम्न कुल में मेरा जन्म अपराध है या द्विज कुल में जन्मे लोगों का अहंकार मात्र जिन्होंने कुल व्यवस्था की विषमता का निर्माण किया।

विशेष:

1. इन पंक्तियों में 'यशपाल' ने समाज की विषमता मूलक वर्ण व्यवस्था का निचोड़ प्रस्तुत किया है जो केवल जन्म के आधार पर जीवन भर अन्याय को स्वीकृति प्रदान करती है।
2. लेखक ने 'यथार्थ सवाल' खड़े किये हैं कि हर अपराध के परिमार्जन का कोई रास्ता होता है लेकिन वर्णवादी व्यवस्था में यह नहीं है।
3. भाषा तत्समी होते हुए भी प्रभाव की दृष्टि से जानदार है।
4. विराम चिह्नों, प्रश्न चिह्नों का कुशल प्रयोग है।
5. सूत्र शैली का सटीक प्रयोग है।
   "जन्म का अपराध? यदि वह अपराध है तो उसका परिमार्जन किस प्रकार संभव है?"
6. वर्णमूलक शोषक व्यवस्था पर रेणु, प्रेमचंद, कबीर, नागार्जुन, इत्यादि कई रचनाकारों ने भी सवाल खड़े किये हैं।

धर्मस्थ का प्रसाद

1

मनुष्य समाज समय की नदी के तट पर स्थित वन समान है। समय की नदी में आने वाले प्लावन इस वन की भूमि को उर्वरा रखते हैं। इसी प्रकार सागल के नगर समाज में परिवर्तन के अनेक प्लावन आये और भावनाओं और अनुभूतियों

अध्याय
3

मैला आँचल (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

खम्हार ! साल-भर की कमाई का लेखा-जोखा तो खम्हार में ही होता है। दो महीने की कटनी, एक महीना मड़नी, फिर साल-भर की खटनी। दबनी-मड़नी करके जमा करो, साल-भर के खाए हुए कर्ज का हिसाब करके चुकाओ। बाकी यदि रह जाए तो फिर सादा कागज पर अँगूठे की टीप लगाओ। सफाई करनी है तो बैल-गाय भरना रखो या हलवाहा-चरवाहा दो। फिर कर्ज खाओ। खम्हार का चक्र चलता रहता है। खम्हार में बैलों के झुंड से दबनी-मड़नी होती है। बैलों के मुँह में जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। गरीब और बेजमीन लोगों की हालत भी खम्हार के बैलों जैसी है।—मुँह में जाली का 'जाब'।...

(परिशिष्ट-15)

संदर्भः प्रस्तुत पंक्तियाँ फणीश्वरनाथ रेणु के द्वारा रचित हिंदी के प्रथम आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से उद्धृत हैं। 'मैला आँचल' बिहार के एक छोटे से गाँव की कथा के बहाने आज़ादी के बाद के भारतीय ग्रामीण परिवेश को संपूर्णता में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

प्रसंगः *प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से रेणु किसानी जीवन के सालभर के क्रियाकलाप को बेबाकी से उद्‌घाटित करते हैं। रचनाकार ने इस गद्यांश के माध्यम से किसानी जीवन के शोषण तंत्र का चित्र प्रस्तुत किया है।*

व्याख्याः मेरीगंज की किसानी परिस्थिति बताते हुए रेणु कहते हैं कि किसान अपने अथक श्रम से खेती करता है, पकते हुए अनाज की रखवाली करता है और फिर सावधानी से कटाई कर संगृहीत अनाज की देख-रेख करता है। खेत के पास ही रहकर अपनी फसल को उगते हुए देखना, पकने पर काट कर इकट्ठा करना-यह उसके सपनों का गर्भगृह है। लेकिन जब उसे बेच कर कुछ मूल्य कमाने की बात सोचता है तो खेती के संसाधनों में व्यय के साथ ही साथ गाँव की शोषणकारी शक्तियाँ भी उसे परेशान कर देती हैं। वह अपने श्रमफल को देखकर आनंदित तो होता ही है, नए सपनों को रचता भी है। लेकिन कर्ज़ और सामाजिक रीति-रिवाज़ों के जाल में फँसे होने के कारण उसके अनाज साहूकारों के हाथों में चले जाते हैं। इस प्रकार उसके सपने उसकी आँखों के सामने टूटते जाते हैं। वह फिर उसी जगह बैठा ठगा-सा महसूस करता रह जाता है। शोषक शक्तियों के आपसी सामंजस्य को वह देख नहीं पाता और शोषण के चक्र को समझ ही नहीं पाता। वह अपने श्रम चक्र को ही उस बैल की भांति नियति मान लेता है जो अपने पैरों से फसल को कुचलकर निकले अनाज को वह देखता तो है परंतु मुँह में रस्सी की जाली लगे रहने के कारण उपभोग नहीं कर पाता।

विशेषः

1. रचनाकार की मंशा भारतीय ग्रामीण परिवेश के किसानी जीवन के यथार्थ को स्पष्ट करना है। इसके लिये वह ललित निबंधात्मक रूप अख्तियार नहीं करता।
2. गाँव का अधिकांश किसान गरीब और बेजमीन की श्रेणी में होता है और निरंतर श्रम को ही अपना जीवन मान लेता है।
3. किसानी जीवन के यथार्थ के लिये रचनाकार ने उसकी तुलना बैल से की है। बैल का श्रम, मूकभाषी दयनीयता, किसानी जीवन से साहचर्य आदि गुण मिलकर किसान के जीवन स्वरूप को गहराई से व्यक्त करते हैं।
4. यह वर्णन किसान की बेबसी और लाचारगी को लेकर करुणा उत्पन्न करता है।
5. प्रस्तुत पंक्तियों की भाषा एक नया रचनात्मक तेवर दिखलाती है। ग्रामीण शब्दों का संयोजन एक आंचलिक लय की सृष्टि करता है।
6. इस गद्यांश की शिल्पगत सुंदरता इसकी उपमा शैली या रूपक शैली है।

अध्याय
4

महाभोज (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

पर बिसेसर लावारिस नहीं। उसकी लाश सड़क के किनारे पुलिस को पड़ी मिली, शायद इसीलिए लावारिस लाश का ख़्याल आ गया। वरना उसके तो माँ भी है, बाप भी। ग़रीब भले ही हों, पर हैं तो। विश्वास नहीं होता था कि वह मरा हुआ पड़ा है। लगता था जैसे चलते-चलते थक गया हो और आराम करने के लिए लेट गया हो। मरे आदमी और सोए आदमी में अंतर ही कितना होता है भला! बस, एक साँस की डोरी! वह टूटी और आदमी गया! देखते-ही-देखते सारा गाँव जमा हो गया।

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश नवलेखन दौर की सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा सन् *1979* ई. में रचित महत्त्वपूर्ण राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है। यह उपन्यास अपने छोटे-से कलेवर में ही राजनीति की तमाम विकृतियों को उजागर करने में सफल रहा है।

प्रसंग: *प्रस्तुत पंक्तियाँ उपन्यास की आरंभिक पंक्तियाँ हैं जहाँ पता चलता है कि 'बिसू' नामक एक दलित युवा की लाश पड़ी हुई है।*

व्याख्या: लेखिका बिसेसर के लावारिस लाश के बहाने उजागर करती हैं कि सत्ता के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले आम जनता का अंतिम परिणाम क्या होता है! एक भरे-पूरे परिवार होने के बावजूद उसकी लाश लावारिस पड़ी है। गलती बस इतनी थी कि वह आदमियों सहित बस्ती में आग लगाने वालों के खिलाफ सबूत इकट्ठा कर रहा था। लेखिका व्यंग्य करती है कि मरे हुए और सोये हुए आदमी में अंतर ही कितना होता है भला! कोई इंसान चलते-फिरते, कब राजनीतिक दुष्चक्रों का शिकार होकर 'सोये हुए इंसान' से 'मरे हुए इंसान' में परिणत हो जाए, कहा नहीं जा सकता। बिसू जैसे युवकों की मौत पर केवल अचंभित हुआ जा सकता है। किसी में हिम्मत नहीं कि इसके खिलाफ खड़े हों। और जो खड़े भी होते हैं, उन्ह. ें मौत के घाट उतार दिया जाता है। बिसू की मौत की खबर सुनते ही गाँव के लोग जमा हो गए। एक भीड़ जुट गई, जिसके आँख, कान, नाक, मुँह सभी बन्द रहते हैं।

विशेष:

1. इन पंक्तियों में दिखाया गया है कि स्वतंत्र भारत में अन्याय के विरुद्ध एक जागरूक नागरिक को किस तरह कुचल दिया जाता है।
2. सत्ता के क्रूरतम रूप को प्रतिबिम्बित किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था का एक ठोस सच है।
3. भाषा का सरलतम रूप प्रयुक्त होने के बाद भी अर्थ अत्यंत प्रभावशाली एवं व्यंजक है। यह रचनाकार के भाषिक सामर्थ्य को दर्शाता है।
4. अर्थव्यंजक सूत्र वाक्य का प्रयोग किया गया है, जैसे- मरे आदमी और सोए आदमी में अंतर ही कितना होता है भला!

2

लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया—इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते

अध्याय 5

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी कहानी के शिखर रचनाकार प्रेमचंद की दलित-जीवन-चित्रण से संबद्ध प्रसिद्ध कहानी 'सद्‌गति' से उद्धृत है।

प्रसंगः *ये पंक्तियाँ तब की हैं जब गाँव का एक दलित दुखी चमार अपनी बेटी के अच्छे भविष्य की कामना से पंडित घासीराम के पास उसकी शादी की साइत निकलवाने जाता है और पंडित के कहने पर बेगार करता है। कड़ी धूप में अत्यन्त कठोर लकड़ी काटते दुखी की प्यास और भूख की परवाह पंडित परिवार नहीं करता और वह काम करते हुए मर जाता है। तब पंडित घासीराम उसकी लाश को ठिकाने लगाने का काम संपन्न करते हैं, जिसका वर्णन दी गई पंक्तियों में किया गया है।*

व्याख्याः ये पंक्तियाँ ब्राह्मण वर्ग की क्रूरता और पाखंड को अनावृत्त कर देती हैं। प्रकारान्तर से ये धर्म के क्रूर सामंती ढाँचे पर चोट करती हैं। दुखी चमार की लाश को उसके पैरों में रस्सी का फंदा डालकर खींचता घासीराम दलितों पर सैकड़ों वर्षों से हो रहे अत्याचार के इतिहास को पाठकों के सामने ला खड़ा करता है। ये पंक्तियाँ यह व्यंजित करती हैं कि हिन्दू समाज-व्यवस्था में धर्म किस तरह साधारण एवं दलित वर्गों के शोषण का हथियार बना रहा है।

पंडित द्वारा पुलिस की चिंता न करके अपनी और अपने घर की पवित्रता की चिंता करना धार्मिक पाखंड और दलितों के प्रति उच्च जातियों की घोर अमानवीय दृष्टि को और तीक्ष्णता से व्यंजित कर देता है।

ये पंक्तियाँ प्रेमचंद की कथा-शिल्प-क्षमता को भी दर्शाती हैं। छोटे-छोटे वाक्यों में पंडित की कई क्रियाओं के संयोजन द्वारा उन्होंने वर्णन में गजब की चित्रात्मकता एवं नाटकीयता का संयोजन कर दिया है।

2

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी कहानी के शिखर रचनाकार प्रेमचंद की कालजयी कहानी 'ईदगाह' से उद्धृत है।

प्रसंगः *ये पंक्तियाँ कहानी की अंतिम पंक्तियाँ हैं। जब हामिद मेले से अपनी दादी अमीना के लिये यह सोचकर खिलौनों की जगह चिमटा खरीद लाता है कि रोटियाँ सेंकते वक्त दादी का हाथ न जले, तब की स्थिति एवं मनःस्थितियों का वर्णन प्रेमचंद ने इन अविस्मरणीय पंक्तियों में किया है।*

व्याख्याः हामिद द्वारा मेले में बालसुलभ इच्छा का सामान खिलौनों की जगह चिमटा खरीदना एक असामान्य बात थी। वस्तुतः यह उम्र के धरातल पर एक बालक होते हुए भी सोच के धरातल पर हामिद के बड़े हो जाने का प्रमाण था। दूसरी ओर हामिद की इस भावना और सोच को देखकर बूढ़ी अमीना का हृदय बच्चों की भावविह्वलित हो उठा। संभवतः उसे वृद्धावस्था में एक संबल मिल गया था। इसलिये वह दुआओं और आँसुओं से लबालब थी। बालक हामिद इस बात को समझने में असमर्थ था कि आखिर उसने ऐसा क्या कर दिया है।

विशेषः

1. ये पंक्तियाँ मार्मिकता की दृष्टि से अप्रतिम हैं।
2. प्रेमचंद में मनुष्य के स्वभाव की पहचान का गहरा सामर्थ्य था जिसे इन पंक्तियों में देखा जा सकता है।

अध्याय **6**

एक दुनिया समानांतर (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

ज़िन्दगी और जोंक (अमरकान्त)

1

उसको देखकर मुझे सदा घृणा होती थी और कभी-कभी यह सोचकर कष्ट होता था कि इस व्यक्ति ने सदा ऐसे प्रयास किये, जिससे इसको भीख न माँगनी पड़े। और उसको भीख माँगनी भी पड़ी है तो इसमें उसका दोष कतई नहीं रहा है।

संदर्भ: व्याख्येय पंक्तियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध स्वातंत्र्योत्तर कहानीकार अमरकांत द्वारा रचित कहानी 'जिन्दगी और जोंक' से उद्धृत हैं। इस कहानी में कथित सभ्य समाज द्वारा एक गरीब व्यक्ति के अंतहीन शोषण के यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है।

प्रसंग: *ये पंक्तियाँ कहानी के चरित्र 'मैं' की हैं जो 'रजुआ' के प्रति व्यक्त हुई हैं। व्याख्येय विचार 'रजुआ' की मृत्यु का समाचार सुनकर उनके मन में आते हैं।*

व्याख्या: कहानी का 'मैं' कहता है कि 'रजुआ' की दीन-हीन व गंदी-मैली दशा देखकर घृणा व कष्ट दोनों होता था। घृणा उसकी गंदगी से तथा कष्ट यह सोचकर कि इस व्यक्ति ने सदा मेहनत की ताकि भीख माँग कर खाना न पड़े। लेकिन बावजूद उसकी मेहनत के उसको बदले में कुछ नहीं मिलता और जो मिलता, उसे लोग उसकी मेहनत की बजाय दया करके देते थे। यदि कभी उसने भीख भी माँगी तो उसका दोष नहीं, समाज व्यवस्था का दोष था, अन्यथा उसने तो सदा लोगों की मुफ्त में सेवा की है।

विशेष:

1. लेखक ने इन पंक्तियों के माध्यम से **'समाज व्यवस्था'** पर चोट की है कि मेहनत के बावजूद कैसे एक गरीब, अनाथ व्यक्ति अत्यंत दयनीय और शोषण की जिन्दगी जीने को विवश होता है।
2. अमरकांत नई कहानी की सामान्य प्रवृत्ति से थोड़ा अलग हटकर गहरे सामाजिक सरोकारों से युक्त कहानीकार हैं जो भारतीय समाज में हाशिये पर फेंक दिये गए लोगों व उनकी दशा को अपनी कहानियों का विषय बनाते हैं। इस रूप में वे प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थ-परंपरा के वाहक कहानीकार हैं।
3. मिश्रित शब्दावली संवाद को संप्रेषणीय व अर्थगर्भित बनाती है। यथा- 'बिल्कुल' की जगह 'कतई' शब्द का प्रयोग।
4. भाषा सरल, सहज व प्रवाहमयी है।

2

मुझे कभी-कभी लगता है कि वह किसी का मुहताज न होना चाहता था और इसके लिये उसने कोशिश भी की जिसमें वह असफल रहा। चूँकि वह मरना न चाहता था, इसलिये जोंक की तरह ज़िन्दगी से चिपटा रहा। लेकिन लगता है, ज़िन्दगी स्वयं जोंक-सरीखी उससे चिपटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त की अंतिम बूँद तक पी गयी।

संदर्भ: व्याख्येय पंक्तियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध स्वातंत्र्योत्तर कहानीकार अमरकांत द्वारा रचित कहानी 'जिन्दगी और जोंक' से संकलित हैं। इस कहानी में कथित सभ्य समाज द्वारा एक गरीब व्यक्ति के अंतहीन शोषण के यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है।

प्रसंग: *ये पंक्तियाँ कहानी के 'मैं' के 'रजुआ' के प्रति विचारों को व्यक्त करती हैं। व्याख्येय विचार 'रजुआ' की मृत्यु का समाचार सुनकर उसके मन में आते हैं।*

व्याख्या: 'मैं' रजुआ के बारे में सोचता है कि वह किसी पर आश्रित या बोझ नहीं बनना चाहता था और इसके लिये उसने लोगों के घरों में काम करने, उनकी सेवा करने का कार्य किया ताकि वह मुफ्त में खाना न खाए। परंतु उसका यह कार्य सफल न हो सका। क्योंकि लोग काम के बदले उसे पर्याप्त पैसे या खाना न देकर उसका शोषण करते थे।

अध्याय
7

भारत-दुर्दशा (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

भारत—हा! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचंद्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था,
"सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि श्मशान हो रही है।
अरे यहाँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग, उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गए?
अरे पामर जयचन्द्र! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था? हाय! अब मुझे कोई शरण देने वाला नहीं।

शब्दार्थ: सूच्यग्रं....केशव = दुर्योधन ने कृष्ण से कहा कि मैं पाण्डवों को बिना युद्ध के तो सूई के अग्रभाग के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा। पामर = नीच।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत गद्यांश भारत-दुर्दशा नाटक के द्वितीय अंक से उद्धृत है। भारतेन्दु दूसरे अंक में 'श्मशान' के स्थान से प्रारम्भ करते हैं। जहाँ श्मशान में एक टूटा-फूटा मंदिर है। इस स्थान पर कौआ, कुत्ता और सियार घूम रहे हैं। मंच पर भारत का प्रवेश होता है।*

व्याख्या: भारत नामक पात्र महाभारत के दुर्योधन की उस उक्ति से प्रारम्भ करता है, जिसमें उसने कृष्ण से कहा था कि 'मैं पाण्डवों को बिना युद्ध के तो, सूई के अग्रभाग के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।' आज वही भूमि श्मशान क्यों नज़र आ रही है। भारतेन्दु यह याद दिलाना नहीं भूलते कि हमारा देश योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग एवं सत्य के लिये विश्व-विख्यात था, आज वह सब कहाँ चला गया। वह भारत के गौरवपूर्ण अतीत का जहाँ स्मरण करता है, वहीं उसे देशघाती जयचंद्र की याद आती है। इसी कारण तो विदेशी आए और यहाँ आकर भारत में शासन करने लगे। भारत नामक पात्र यह कहता है कि आज मुझे कोई शरण देनेवाला नहीं है। जयचंद्र सरीखे व्यक्ति के ही कारण आज मेरी यह स्थिति हो गई है। आज मैं अनाथ हूँ। मुझे कोई शरण देने वाला नहीं। यह सब कहता-हुआ भारत रोने लगता है।

विशेष:

1. इन पंक्तियों पर नवजागरण चेतना का प्रभाव दिखाई दे रहा है। ये नवजागरण चेतना की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता 'आत्मावलोकन' को धारण कर रही है।
2. भारतेन्दु ने पौराणिक संदर्भ के माध्यम से भारत के गौरवशाली अतीत का चित्र उकेरा है। गौरवशाली अतीत का अंकन नवजागरण से प्रभावित साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है।
3. मानवीकृत भारत ने अपनी वर्तमान दुर्दशा के लिये जयचन्द्र को देशद्रोही व नीच कहा है जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान को युद्ध में हराने के लिये मुहम्मद गौरी की मदद की थी।
4. नाटककार ने भारत की जर्जर दशा के लिये उनके द्वारा ही हताशा और निराशा को प्रकट किया है।
5. तत्सम व तद्भव शब्दों का सुन्दर समन्वय किया गया है।
6. भारत का मानवीकरण करके, उसके द्वारा संवाद कहलवाकर भारतेन्दु ने एक नवीन शैली के उद्घाटन के साथ कथ्य को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है।

2

महाराज, वेदांत ने बड़ा ही उपकार किया। सब हिंदू ब्रह्म हो गए। किसी की इतिकर्त्तव्यता बाकी ही न रही।
ज्ञानी बनकर ईश्वर से विमुख हुए, रुक्ष हुए अभिमानी हुए और इसी से स्नेहशून्य हो गए।
जब स्नेह ही नहीं तब देशोद्धार का प्रयत्न कहाँ? बस, जय शंकर की।

शब्दार्थ: इति कर्त्तव्यता = कर्त्तव्य। रूक्ष = कठोर।

अध्याय
8

स्कंदगुप्त (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

1

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी- अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उंह। जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाट्येतिहास के शिखर पुरुष जयशंकर प्रसाद द्वारा 1928 ई. में रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक स्कंदगुप्त से लिया गया है।

प्रसंगः *ये पंक्तियाँ 'स्कंदगुप्त' नाटक की आरंभिक पंक्तियाँ हैं जो स्कंदगुप्त द्वारा एकालाप के रूप में कही गई हैं।*

भावार्थः इन पंक्तियों में स्कंदगुप्त सत्ता में निहित अधिकार भाव को अत्यधिक मादक बता रहा है। मादकता व्यक्ति को विवेकहीन बना देती है। उसके अनुसार इसी कारण व्यक्ति अधिकार-सत्ता की वास्तविकता को नहीं पहचान पाता। स्कंदगुप्त के अनुसार वास्तव में अधिकार-सुख निरर्थक होता है। किंतु, इसी निरर्थक सुख के लिये व्यक्ति लगातार प्रयत्नशील रहता है क्योंकि अधिकार एवं सत्ता के उन्माद में वह स्वयं को नियामक और कर्ता समझने लगता है। फिर स्कंदगुप्त अपने इस भाव को विराम देते हुए कहता है कि साम्राज्य के एक सैनिक के रूप में अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन उसका दायित्व है।

विशेषः

1. ये पंक्तियाँ प्रसाद की उस जीवन-दृष्टि की ओर संकेत कर रही हैं, जो केवल भौतिक सुखों की उपलब्धि में मानवीय जीवन को सार्थक नहीं मानता बल्कि अपनी सार्थकता की खोज अपने मूल व्यक्तित्व की उपलब्धि और समरसता की स्थिति में करता है।
2. इन पंक्तियों में नायक स्कंदगुप्त का अंतर्द्वन्द्व दिखाई देता है, जिस पर स्वच्छंदतावादी नाट्यपरंपरा का प्रभाव लक्षित होता है।
3. 'अधिकार-सुख को मादक और सारहीन मानना' स्कंदगुप्त पर ट्रैजिक हीरो का प्रभाव दिखलाता है।
4. इन पंक्तियों में लक्षित किया जा सकता है कि राष्ट्रभक्ति स्कंदगुप्त दायित्व समझ कर निभाता है, न कि वैयक्तिक प्रेरणा से।
5. इन पंक्तियों की भाषा की मूल प्रकृति तत्समी है।
6. प्रथम पंक्ति सूत्रभाषा के प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो प्रसाद की भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।
7. ये पंक्तियाँ वर्तमान जीवन-संदर्भों में भी प्रासंगिक है, जहाँ अधिकार और सत्ता की लिप्सा बढ़ती जा रही है। यह व्यक्ति में सुख का भ्रम तो पैदा करती है किंतु अपनी परिणति में अर्थहीन होती है।

2

राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाट्येतिहास के शिखर प्ररुष जयशंकर प्रसाद द्वारा 1928 ई. में रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक स्कंदगुप्त से लिया गया है।

प्रसंगः *ये पक्तियाँ नाटक के प्रथम अंक से ली गयी है। इनमें पर्णदत्त स्कंदगुप्त को राष्ट्रनीति को वहन करने की शक्ति व उत्तरदायित्व की शिक्षा दे रहा है।*

अध्याय 9

आषाढ़ का एक दिन (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

अंक एक

1

तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिन्तित होगी। परन्तु माँ...
...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती।
चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आये थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गयी। एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं।
वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्भुत।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत अवतरण मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है। नाटक के प्रथम अंक के इस अंश में मल्लिका अपनी माँ को वर्षा विहार का अनुभव सुना रही है।*

व्याख्या: मल्लिका अपनी माँ से कहती है कि वह अपनी पुत्री के वर्षा में भींगने से चिंतित रही होगी। परंतु मल्लिका को भींगने का कोई अफसोस नहीं है। उल्टे यदि वह नहीं भींगती तो एक अपूर्व अनुभव से वंचित रह जाती। वह वर्णन करती हुई बताती है कि किस प्रकार चारों ओर बादल घिर आए थे। उसे पता था कि वर्षा होगी। फिर भी वह घाटी के पतले रास्ते पर नीचे की ओर उतरती गई। उस समय एक बार हवा के झोंके के कारण मल्लिका का दुपट्टा भी उड़ गया था। उसके बाद वर्षा होने लगी थी। फिर वह माँ से कहती है कि वह वस्त्र बदलने जा रही है। जाते-जाते वह यही कहती है कि वर्षा में भींगने का अनुभव अद्भुत था।

विशेष:

1. 'वंचित रह जाने' की बात कहकर मल्लिका प्रेमी के साहचर्य और प्रेमानुभूति को जीवन की उपलब्धि के रूप में स्थापित कर रही है।
2. ये पंक्तियाँ माँ और पुत्री के सहज और आत्मीय संबंध को भी ध्वनित कर रही हैं।
3. इन पंक्तियों में एक मातृहृदय और एक युवा स्त्री के हृदय का मनोविज्ञान भी व्यंजित हो रहा है।
4. मोहन राकेश का व्यंजना-कौशल इन पंक्तियों में दर्शनीय है जहाँ बाह्य स्तर पर भींगना वर्षा के जल में भींगना है तो आंतरिक स्तर पर प्रेमानुभूति में।
5. संवाद के स्तर पर ये पंक्तियाँ छोटे-छोटे वाक्यों और विराम चिह्नों के कुशल एवं परिपक्व प्रयोग के कारण अभिनेयता की दृष्टि से बिल्कुल उपयुक्त बन पड़ी हैं।

2

नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ। ...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है! ओह! शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श!

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत व्याख्यांश मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है। नाटक के पहले अंक के इस अंश में मल्लिका अपने प्रेमी के साथ वर्षा विहार से जुड़े अनुभव का वर्णन अपनी माँ से कर रही है।*

व्याख्या: मल्लिका अपनी माँ को बादल से आवृत आकाश की चित्रमय झाँकी प्रस्तुत करती हुई बताती है कि आकाश नीले कमल की भाँति दिखाई दे रहा था। वह नीले कमल की ही तरह कोमल और भींगा हुआ दिख रहा था। वह बादल हवा की तरह हल्का और स्वप्न के समान रंगीन दिखाई पड़ रहा था। वह माँ से कहती है कि उसके शरीर में पर्याप्त वर्षा

अध्याय
10

चिंतामणि (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

कविता क्या है?

1

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग एवं ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचंद्र शुक्ल के प्रसिद्ध निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है। इस गद्यांश में निबंधकार द्वारा कविता की मूल भावना का स्पष्टीकरण किया गया है।*

व्याख्या: जब किसी व्यक्ति का ज्ञान पूर्णता के स्तर को छूते हुए उसकी आत्मा को मुक्ति भाव दिला दे, तब यही स्थिति ज्ञान दशा कहलाती है। ठीक उसी प्रकार रसों का परिपाक स्थिति में पहुँच जाना हृदय की मुक्ति के मार्ग खोल देता है तथा हृदय की यही दशा रसदशा कहलाती है।

हृदय की इस स्थिति तक पहुँचने के लिये मनुष्य जिन शब्दों की रचना करता है, उनका समग्र रूप ही 'कविता' कहलाता है। रचनाकर्म की यह प्रक्रिया 'भावयोग' कहलाती है, जो कर्मयोग व ज्ञानयोग के समान महत्त्व रखती है।

विशेष:

1. तुलनात्मक अध्ययन का व्यवस्थित उपयोग कर कविता को परिभाषित किया गया है।
2. इन पंक्तियों में रामचंद्र शुक्ल ने कविता की ठोस परिभाषा दी है।
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हृदय-पक्ष को अत्यंत महत्त्व देते हैं। कविता की महत्ता इसी हृदय-पक्ष से संबद्ध होने के कारण है।
4. इन पंक्तियों में रामचंद्र शुक्ल की विश्लेषण-क्षमता और किसी भी चीज को परिभाषित करने की क्षमता देखते ही बनती है।
4. भाषा तत्समी सूक्ष्मताओं से युक्त होने के बावजूद न प्रसाद गुण से वंचित है और न ही प्रभाव क्षमता से।
5. भाषा के प्रयोग में जो 'गूढ़-गुंफित विचार परम्परा' गूंथी हुई दिखती है, वह शुक्ल जी की वैज्ञानिक शैली का प्रमाण है, जिसमें एक-एक शब्द का सटीक चयन तथा शब्दों का पूर्णत: निश्चित क्रम दिखाई पड़ता है।

2

कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचंद्र शुक्ल के प्रसिद्ध निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है। इस गद्यांश में निबंधकार द्वारा कविता की मूल भावना का स्पष्टीकरण किया गया है।*

व्याख्या: कविता के प्रभाव की समीक्षा करते हुए शुक्ल जी स्पष्ट करते हैं कि कविता मनुष्य के स्वार्थ संबंधों को समाप्त कर उसका समष्टि से मिलन कराती है। यह ऐसी स्थिति है जहाँ भावनात्मक संबंधों का विकास होता है। प्रत्येक

अध्याय
11

निबंध-निलय (महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या)

विद्यार्थियों को व्याख्या समझाने के लिये हमने यहाँ मूल रचना के कुछ अंशों का उपयोग किया है। इसके लिये हम इसके लेखक/संपादक तथा प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता) : प्रेमचंद

मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्सन्देह कला का उद्देश्य-सृष्टि की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो।

संदर्भ एवं प्रसंग: *प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद द्वारा रचित निबंध 'साहित्य का उद्‌देश्य' से लिया गया है। इस गद्यांश में प्रेमचंद की कला के प्रयोजन-संबंधी दृष्टि प्रस्तुत हुई है।*

व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों में प्रेमचंद यह कह रहे हैं कि जैसे अन्य वस्तुओं के महत्त्व को निर्धारित करने वाले आधार उनकी 'उपयोगिता' है, उसी प्रकार वे कला के महत्त्व का आकलन भी उसकी 'उपयोगिता' के आधार पर करते रहे हैं। वे मानते हैं कि कला आध्यात्मिक आनन्द भी देती है, किंतु इसमें भी 'उपयोगिता' का तत्त्व निहित है।

विशेष:

1. इन पंक्तियों में प्रेमचंद ने अपनी कला-दृष्टि को स्पष्ट शब्दों में उजागर किया है।
2. इन पंक्तियों में प्रेमचंद कला की कलावादी व्याख्या का निषेध करते हैं, वे उसकी अलौकिक अध्यात्मवादी व्याख्या को भी नकारते हैं।
3. कला की प्रगतिवादी व्याख्या से साम्य रखती है जो कला को सामाजिक कर्म मानती है।
4. सरल, प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया गया है।

साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है : बालकृष्ण भट्ट

जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ व प्रसंग: *प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतेन्दुयुगीन हिन्दी निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' से उद्धृत की गई हैं। बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के ऐसे निबंधकार हैं जिन्होंने हिन्दी निबंध को उसके प्रारंभिक युग में जहाँ एक ओर गहन चिंतन से संपृक्त किया, वहीं दूसरी ओर मानकता की ओर अग्रसर होती हिन्दी भाषा से।*

व्याख्या: इन पंक्तियों में बालकृष्ण भट्ट हिन्दू जाति के कमजोर पड़ने के कारणों को रेखांकित करते हुए उसका एक प्रमुख कारण हिन्दू धर्म के भीतर अनेक मत-मतान्तरों एवं संप्रदायों के उदय को मानते हैं। वे लिखते हैं कि पहले एक ही मत वैदिक मत प्रचलित था, किन्तु धीरे-धीरे कई मत अस्तित्व में आते गए और हिन्दू जाति कई टुकड़ों में बंटती गई और यह क्रम लगातार जारी है।

विशेष:

1. इन पंक्तियों में भारतेंदुयुगीन नवजागरण के अंतर्विरोधों को देखा जा सकता है। बालकृष्ण भट्ट बार-बार भारत को 'आर्यो का देश' एवं 'हिन्दू जाति' जैसे पदों से पहचानते हैं जो कि आगे चलकर हिन्दी नवजागरण की एक बड़ी सीमा बन जाती है।
2. 'हमारी एक हिन्दू जाति' इस शब्दावली के प्रयोग से उनकी भारतीयता की अवधारणा कुछ संकीर्ण नज़र आती है।
3. इन पंक्तियों के माध्यम से यह देखा जा सकता है कि भारतेन्दु-युग के अंतिम चरण में हिन्दी गद्य ब्रजभाषा के प्रभाव से लगभग मुक्त हो गई थी।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456